‘नासिरा शर्मा’ के उपन्यासों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन

निर्देशक

डॉ. शैल शर्मा
प्रोफेसर
साहित्य एवं भाषा-अध्ययन शाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर
(छ.ग.)

शोधार्थी

रमा साहू
पं. रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

शोध-केन्द्र
साहित्य एवं भाषा-अध्ययन शाला
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)

रूपरेखा

1. शोध – प्रबंध का शीर्षक
2. भूमिका
3. पूर्व में किए गए कार्यों का विवरण
4. उद्देश्य
5. प्रस्तावित कार्य में उल्लेखनीय योगदान
6. प्रस्तावित शोध–प्रविधि
7. प्रस्तावित अध्यायीकरण
8. आधार ग्रंथ–सूची
9. संदर्भ ग्रंथ–सूची
10. प्रकाशित शोध–पत्रों का विवरण

1. **नासिरा शर्मा के उपन्यासों का समाजभाषा वैज्ञानिक अध्ययन**

2. **भूमिका**

'भाषा' मानव व्यवहार की प्रकृति प्रदत्त एक अमूल्य साधन है। भाषा के द्वारा ही हम अपने शब्दों, भावों एवं विचारों को एक–दूसरे तक संप्रेषित कर अपने को स्थापित करतें हैं। भाषा के अभाव में संपूर्ण मनुष्यता की कल्पना अधूरा है, क्योंकि मनुष्य धरती के अन्य प्राणियों से विशिष्ट है, इसका कारण 'भाषा' ही हैं।

चॉम्स्की के अनुसार :– 'भाषा' मानवीय बुद्धि का जैविक गुण हैं।

'भाषा' शब्द संस्कृति के 'भाष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ बोलना है। अर्थात् भाषा वह है जिसे बोला जाए। मानव–समाज में कई भाषाएँ बोली जाती है। प्रत्येक भाषा की अपनी विशेषताएँ होती है, जो उसकी कृति को विशिष्टता प्रदान करती हैं। 'समाजभाषाविज्ञान का आशय समाज के परिप्रेक्ष्य में भाषा का अध्ययन'है, और यही समाजभाषाविज्ञान का मुख्य कार्य है। समाजभाषाविज्ञान के अंतर्गत भाषा और उसे बोलने वाले समाज के बीच पाए जाने वाले संबंधों का अध्ययन तथा विश्लेषण किया जाता है। समाजभाषाविज्ञान, भाषाविज्ञान की एक व्यावहारिक एवं महत्वपूर्ण शाखा है। भाषाविज्ञान की इस धारा ने ही भाषा को समाज के संदर्भ में परिभाषित करने का प्रयत्न किया है, और भाषाई–प्रयोगों के सामाजिक संदर्भो पर ध्यान देकर भाषा को समाज–सापेक्ष बनाया। इस प्रकार समाजभाषाविज्ञान का जन्म सन् 1960 के आरंभिक चरण में हुआ हैं। 1972 से पहले समाजभाषावैज्ञानिक सामाग्री विशेषताएॅ सांस्कृतिक मनावविज्ञान के रूप में छोटे–छोटे रूप में छपती रही है।

1972 में प्रसिद्व अमरीकी भाषावैज्ञानिक 'ब्लूमफील्ड' की शिक्षितों तथा अशिक्षितों के वाक्–व्यवहार पर एक निबंध प्रकाश में आया। उन्हीं दिनों 'एडवर्ड सपीर' ने भी महसूस किया कि ''भाषा एवं समाज के बीच घनिष्ठ संबंध है।

समाजभाषाविज्ञान की परिभाषा

चुतुर्भुज सहाय– ''समाजभाषाविज्ञान की मुल दृष्टि भाषा को समाज और संस्कृति के अवयव के रूप में अध्ययन करने की है।''

डेल हाइम्स– '' समाजभाषाविज्ञान के अंतर्गत भाषायी सामग्री एवं विश्लेषण का समाज के संदर्भ में प्रयोग तथा इसके विपरीत सामाजिक सामग्री एवं विश्लेषण का भाषाविज्ञान में प्रयोग द्रष्टव्य है।

अर्थात् मानव–जीवन तथा समाज के परिप्रेक्ष्य में भाषा पर पुनर्विचार एवं उसके स्थान का पुनर्मूल्यांकन करता है।

समाजभाषाविज्ञान की संकल्पना के मूल में हमेशा यही प्रेरक प्रश्न निहित रहा है अर्थात् कौन, किस समय, किस स्थान पर, किस विषय में कैसी भाषा का प्रयोग करता है।

नासिरा शर्मा देश के सुप्रसिद्ध साहित्य–जगत् की लेखिका हैं। वे हिंदी, उर्दू, फारसी, पश्तों, अँग्रेजी आदि भाषाओं में उनकी अच्छी पकड़ हैं तथा मूर्धन्य कथाकार उपन्यासकार मानी जाती हैं। उन्होंने बहुत सारी कहानियाँ, उपन्यास, निबंध, लेख संग्रह, अनुवाद, रिपोर्ताज नाटक तथा कुछ कहानियों पर टेलीफिल्मस और धारावाहिक लिखी है। नासिरा जी समाज में उपस्थित औरतों के प्रति दयनीय अवस्था को अनुभव किया था और अपने अनुभवों को उन्होने साहित्य के माध्यम से निर्भीकता से समाज में उपस्थित रूढ़िवादियों तथा कुप्रथाओं को और औरतों तथा परिवारों में बँटवारे को लेकर किए जा रहें अन्याय के विरूद्ध सर्वप्रथम आवाज उठाई। उनकी भाषा में ग्रामीण शहरी जीवन की सरलता झलकती है।

नासिरा जी की चिंतन–परंपरा का आधार उनके वालिद द्वारा बताये रास्ते में चलकर एक नया मुकाम हासिल किया । नासिरा जी का उपन्यास भारतीयता का नया बहुसार्थक पाठ रचती है। आज वे उत्तर आधुनिक समय में जबकि भूमंडलीकारण बाजारवाद की तमाम शक्तियाँ हमारी जातीय स्मृति, जातीय अस्मिता हमारे जातीय संवेदना को मिटा देने पर आमदा दिखाई देती है। ऐसे कठिन समय में हमारे देश में नासिरा जी के उपन्यास अर्थवत्ता और बढ़ती जाती है। इनके उपन्यासों में ग्रामीण भाषा का सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। नासिरा जी ने पात्रनुकूल भाषा का प्रयोग कर कीर्तिमान स्थापित किया है। नासिरा जी की भाषा जनमानस की भाषा हैं। इनके उपन्यासों में हिंदी उर्दू, अँग्रेजी, फारसी शब्दों का प्रयोग जो जनमानस में प्रचालित हैं का प्रयोग देखने को मिलता हैं।

3. **पूर्व में किए गए शोध कार्यों का विवरण**

पूर्व में हुए कार्यो जैसेः–

1. 2006 में श्रीमती आरती पाठक ने प्रसाद के नाटकों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन डॉ. व्यासनारायण दुबे के मार्गदर्शन में किया । उन्होंने प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों में उस समय की भाषा का समाज में किस प्रकार प्रयोग हुआ है का ही अध्ययन किया है, उन्होंने भाषा को वर्ग, जाति, शिक्षा, लिंग, उम्र, स्थान के आधार पर विश्लेषित किया है। उनके अध्ययन से उस काल की भाषा का आज के संदर्भ में होने वाले परिवर्तनों को देखा जा सकता हैं।
2. 2007 मे मोती लाल शाकार ने डॉ. व्यासनारायण दुबे के मार्गदर्शन में वृदांवन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन किया है। उन्होंनें उस समय के समाज में हिन्दी भाषा का जो प्रयोग हुआ का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन किया है। तथा इससे ज्ञात होता है कि उस समय का समाज कितना अधिक उन्नत था उसके आधार पर भाषा समृध्द हो रही है। ऐतिहासिक उपन्यासों में पात्रनुकूल जिस भाषा का प्रयोग हुआ है वह वर्तमान परिवेश में समाज से बाहर ही हो गया है।
3. 2013 – 14 में अंजु सोनी ने मोहन राकेश के नाटकों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन डॉ. व्यास नारायण दुबे के निर्देशन मे किया गया है। मनुष्य भाषा और समाज की बीच की कड़ी है जैसे – जैसे समाज विकसित होता जाता है। भाषा का प्रयोग भी समाज में होने लगता है। शोधार्थी ने मोहन राकेश ने अपने नाटकों का मध्यमवर्ग की समस्याओं को चुना है। उनकी भाषा सहज और सरल है। समान्य बोलचाल की भाषा है। शोधार्थी ने सामाजिक स्तर के आधार पर भाषा का अध्ययन किया है।
4. 2017 में सोनल मिश्रा ने Scociolinguistics study of the select plays of vijay tendulkar अध्ययन डॉ. सविता सिह के निर्देशन में विजय तेन्दुलकर के नाटकों में सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पक्षों का अध्ययन किया है। उसके नाटकों में पात्रों का चरित्र–चित्रण एवं उसके आधार पर भाषा का अध्ययन किया है। शोधार्थी ने भाषा का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भी किया है।

4. **उद्देश्यः**—उपन्यासकार का प्रमुख उद्देश्य समाज और जीवन को प्रतिबिंबित करना है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सत्य की प्रस्तुति के समक्ष मनोरंजन गौण हो जाता है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में भाव किसी प्रवाहित नदी में उठने वाली भँवर जैसा हैं, जो दिखाई नहीं देती परन्तु पाठकों के अन्तरमन को आंदोंलित करती है।

चरमराती व्यवस्थाओं एवं टुटते मानव—मूल्यों के कारण युगबोध का बदलना स्वाभाविक है। युगबोध के परिर्वतन से परपंरागत सिद्धांतों में भी परिवर्तन हुआ है, जिसमें पुनर्मूल्यांकन एवं कृतियों को पुनर्परीक्षण की आवश्यकता बढ़ती जाती है। अतः नासिरा शर्मा जी के साहित्य में प्रयुक्त समाज की भाषा का भाषावैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता एवं उपादेता स्वयं सिद्ध हो जाती है। इनके साहित्य पर अनुसंधान कार्य हो रहें। मेरे अनुसंधान का यही प्रतिपादय है कि युगीन परिस्थितियों में हो रहे समसामयिक परिर्वतन से भरे उपन्यासों पारिजात, ठीकरें की मँगनी, अक्षयवट, शाल्मली, क़ागज की नाव का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन करना।

5. **प्रस्तावित कार्य में उल्लेखनीय योगदान :—**

नासिरा शर्मा सामाजिक समस्याओं , सामाजिक वर्ग वैषमय एवं आर्थिक विषमता की लेखिका हैं। औरतों के अभिशप्त जीवन को इन्होनें वाणी दी है यद्यपि नासिरा शर्मा के व्यक्तित्व व कृतित्व पर अनेकानेक अनुसंधानकार्त्ताओं ने अनुशीलन किया है। लेकिन नासिरा शर्मा ने वैश्विक कुरीतियों, जनमानस की सोच को उजागर करके नया प्रयोग किया है। उसका समाजभाषावैज्ञानिक विश्लेषण अभी तक नहीं हुआ हैं। मेरे अध्ययन से वर्तमान भाषा का नासिरा शर्मा के उपन्यास में जिन स्वरूप में व्याप्त है उसे प्रकाश में लाकर उसके व्यवहार क्षेत्र को उजागर कर एवं उपन्यास मे दर्शित समाज में वर्ग विशेष के भाषा किस तरह परिवर्तित हो रही है इस का भी अध्ययन करना।

6. **प्रस्तावित शोध—प्रविधि**

शोध की वैज्ञानिक कार्यपद्धति को अपनाते हुए इसका क्रियान्वयन विभिन्न चरणों में किया जा सकता है — ऐतिहासिक ,तुलनात्मक , वर्णनात्मक चूंकी मेरे शोध का क्षेत्र समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन है। उस आधार पर वर्णनात्मक शोध पद्धति को अपनाते हुए मैं अपने शोध के सोपानो को तय कर अपने शोध को पूर्णता प्रदान करूँगी। वर्णनात्मक के आधार को मूल में रखते हुए शोध के प्रारूप का निर्धारण किया गया है। जिसमें सामाजिक अनुसंधानों को सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तावित शोध कार्य में प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रणाली की विधि की सहायता ली जाएगी। प्राथामिक प्रणाली में सभी उपन्यासों की कथावस्तु का अध्ययन किया जाएगा एवं साक्षात्कार हेतु प्रश्नावाली तैयार की जाएगी । दूसरा प्रणाली में विभिन्न समीक्षात्मक पुस्तकों एवं इंटरनेट की सहायता ली जाएगी उपन्यास की भाषा का विश्लेषण कार्ड पद्धति के माध्यम से किया जायेगा ।

7. प्रस्तावित अध्यायीकरणः— नासिरा शर्मा के उपन्यासों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन

प्रथम अध्यायः— भूमिका

1.0 प्रस्तावना

1.1 नासिरा शर्मा का जीवन परिचय

1.2 उपन्यासों का प्रादूर्भाव एवं नासिरा शर्मा के उपन्यासों की कथा—वस्तु

1.3 समाजभाषाविज्ञान एक परिचय

1.4 किए गए पूर्व शोध कार्य

1.5 कार्य—पद्धति

1.6 कार्य का महत्व

1.7 कार्य की सीमाएँ

द्वितीय अध्यायः—नासिरा शर्मा के उपन्यासों की सामाजिक विवेचना

2.0 प्रस्तावना

2.1 समाज की परिस्थिति—संरचना

2.2 उपन्यासों में परिलक्षित—संस्कृति

2.3 सामाजिक—संरचना

2.4 धार्मिक—अवस्थाऍ

2.5 आर्थिक—संरचना

2.6 लोक—कला एवं लोक—साहित्य

तृतीय अध्यायः— भाषा और सामाजिक परिवर्तन

3.0 प्रस्तावना

3.1 वर्ग

3.2 लिंग

3.3 जाति

3.4 शिक्षा

3.5 अवस्था

3.6 क्षेत्र

चतुर्थ अध्यायः– समाजभाषाविज्ञान का सैद्धान्तिक पीठिका

4.0 प्रस्तावना

4.1 भाषा और समाज का पारस्परिक संबंध

4.2 वक्ता–श्रोता

4.3 स्थान

4.4 काल

4.5 कोड

पंचम अध्यायः– भाषा और मनोवैज्ञानिक–परिवर्तन

5.0 प्रस्तावना

5.1 सन्दर्भ (विषय)

5.2 देश (क्षेत्र)

5.3 काल (समय)

5.4 परिस्थिति (मानसिक दशा)

षष्ठ अध्यायः–उपन्यासों में प्रयुक्त कोड

6.0 प्रस्तावना

6.1 विवेच्य उपन्यासों में प्रयुक्त कोड

6.2 कोड–विकल्पन

6.3 विविध कोड प्रयोगों का विवेचन

8. आधार ग्रंथ सूची

शर्मा, नासिरा. **'अक्षयवट',** नयी दिल्ली : भारतीय ज्ञानपीठ, (2003).

शर्मा, नासिरा. **'शाल्मली',** नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, (2013).

शर्मा, नासिरा. **'पारिजात',** नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, (2014).

शर्मा, नासिरा. **'ठीकरे की मँगनी',** नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, (2014).

शर्मा, नासिरा. **'कागज की नाव',** नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, (2014).

9. संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ. भाषाविज्ञान; सैद्धान्तिक चिन्तन, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन 1997.
2. गुप्त, मोतीलाल. आधुनिक भाषाविज्ञान की भूमिका. जयपुर : राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, प्रथम संस्करण, 1974.
3. तिवारी, भोलानाथ. भाषाविज्ञान. इलाहाबाद : किताब महल, 2000.
4. द्विवेदी, कपिलदेव. भाषाविज्ञान एवं भाषाशास्त्र. वाराणसी : विश्वविद्यालय प्रकाशन, ग्यरहवाँ संस्करण, 2008.
5. पाठक, विनय कुमार. जयश्री शुक्ल. अनुसंधान प्रविधि और प्रक्रिया. दिल्लीः भावना प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2005.
6. पाठक, रामचंद्र, आदर्श हिन्दी शब्दकोश, वाराणसी : भार्गव बुक डिपो; 1993,
7. प्रसाद, वासुदेवनंदन, आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना, पटनाः भारतीय भवन प्रकाशन, तेईसवाँ संस्करण,
8. श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ, हिन्दी भाषा का समाजशास्त्र, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन, द्वितीय संस्करण; 1994,
9. वर्मा, रामचंद्र, मानक हिन्दी शब्दकोश, प्रयाग : हिन्दी साहित्य सम्मेलन; 1996,
10. शुक्ल, त्रिभुवननाथ, हिन्दी भाषा का आधुनिकीकरण एवं मानकीकरण, कानपुर : विकास प्रकाशन, प्रथम संस्करण; 2005,

10. अप्रकाशीत शोध–प्रबंध

1. सक्सेना साधना (1982) फणीश्वर नाथ रेणु के आंचालिक उपन्यासों का समाज भाषा वैज्ञानिक अध्ययन।
2. साकार, मोतीलाल (2008) वृदांवन लाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन रायपुर पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय।
3. पाठक, आरती. (2006) प्रसाद के नाटको का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन।
4. सोनी, अंजु (2013–14) मोहन राकेश के नाटकों का समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन।